कृति-2

श्रीमती शोभा मिश्र

Scanned with OKEN Scanner

कृति – 2
– श्रीमती शोभा मिश्र

द्वितीय संस्करण – 2015

प्रकाशक
अमन प्रकाशन,
नमक मंडी, सागर 4700002 (म.प्र.)
Ph. : 07582-406929

अक्षर संयोजन
एक्टिव कम्प्यूटर्स, सागर
मोबा. – 9826434225

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

1.	शब्दों में ध्वनित होते रिश्ते	7
2.	मार्मिक क्षण	9
3.	वजीरसिंह पानी पिला दे : उसने कहा था	11
4.	आस्था और संस्कृति के स्वर, शक्ति की उपासना	14
5.	बिखरती आस्था टूटते विश्वास	16
6.	निर्मल चंद निर्मल का नया काव्य संग्रह	18
7.	इस्तीफे की पहल करना समस्या का हल नहीं	21
8.	सद्भावना के प्रतीक : पर्यूषण पर्व एवं गणेश उत्सव	22
9.	साईं बाबा : ईश्वरीय शक्ति के अलौकिक के पुंज।	24
10.	काहे को तूने दुनिया बनाई।	26
11.	बचपन की धुंधली यादों में नर्मदा	28
12.	सत्ता और सम्पदा के चक्रव्यूट में फंसा देश	30
13.	अघटन घटना क्या समाधान ?	32
14.	हमारे ओल्ड कॉफी हाउस !	33
15.	सजन रे झूठ मत बोलो	35
16.	बाबुल हम तोरे अंगना की चिड़िया	37
17.	बनते बसेरे उजड़ते घोंसले	39
18.	बात भारतीयता की	41
19.	शब्द हमारी अभिव्यक्ति के संवाहक हैं	43
20.	अपने आसपास छोटी-छोटी खुशियों को देखें	45
21.	एक कुएं की कहानी अपनी जुबानी	48
22.	आओ लिखे नई इबारत	50
23.	बचपन के दिन भी क्या दिन थे	52
24.	आज भी अतीत के रंगों को जी सकते हैं	54
25.	हरियाली तीजः उमंग और उल्लास का पर्व	56

Scanned with OKEN Scanner

26. मदर्स-डे, मंदिर का वह दीप 57
27. एक अनछुआ अहसास हमारे पितृों का 58
28. ओ अषाढ़ के पहले बादल 60
29. शक्ति की उपासनाःआस्था का सांस्कृतिक स्वर 62
30. धार-दार कलम 65
31. एक बंगला बने न्यारा 67
32. भारत रत्न सम्मान की धूमिल होती गरिमा 69
33. मंदिरों के घंटे 70
34. बुंदेले हर बोलों के मुंह 72
35. रिद्धी-सिद्धि-समृद्धि का आलोक पर्वः दिवाली 76
36. मुंशी प्रेमचंद आज भी प्रासंगिक हैं 78
37. नीलकंठ तुम नीले रहियो 83
38. धर्म के बाजार में खंडित होती आस्था 86
39. हिन्दुत्व की अवधारणा 88
40. रवि बाबू के : बहुआयामी व्यक्तित्व के विविध रूप 92
41. संकल्प शीलता के पर्याय : राजा राममोहन राय 95
42. हिन्दी दिवस क्यों..... 99
43. जय हनुमान ज्ञान गुन सागर 101
44. समन्वय की संस्कृति और आस्था के आयामःमहावीर स्वामी 106
45. उनका दिन जो हमें देते हैं दिशा 110
46. त्याग व तपस्या के प्रतीक गणेश जी 113
47. गांधी के विविध रूप 117
48. मेरी आवाज सुनो .....! 122
49. युग प्रासंगिता के अद्भुत प्रतीक 126
50. देश भक्ति के अन्यतम प्रतीकः चंद्रशेखर आजाद 130
51. देश को नई क्रांति चेतना देने वाले -बाल गंगाधर तिलक 132
52. आजादी का नया सवेरा 134

Scanned with OKEN Scanner

भूमि पर चरित्र चित्रण की और पूर्ण रूपेण ध्यान दिया और मानव जीवन से जुड़ी समस्याओं का अपने उपन्यासों में बड़ी संवेदनशील शैली में चित्रण किया। वस्तुतः हिन्दी उपन्यासों में यथार्थवादी विचारधारा का उचित प्रकाशन प्रेमचंद से ही प्रारंभ होता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने मुंशी प्रेमचंद का सही आकलन बड़े ही मार्मिक शब्दों में व्यक्त किया है- प्रेमचंद शताब्दियों से पद दलित, अपमानित और उपेक्षित कृषकों के पग पर लांछित और असाध्य नारी जाति की महिमा थे, गरीबों और बेबसों के महत्व के प्रचारक थे अगर की समस्त जनता के आचार विचार, भाषा भाव, रह सुख और सूझ-बूझ जानना चाहते हैं तो प्रेमचंद आपको नहीं मिलेगा। झोपड़ियों से लेकर महलों त से लेकर बैंकों तक, गांव से लेकर सभाओं तक आप र्वक और प्रमाणिक भाव से कोई नहीं ले जा सकता

इस प्रकार प्रेमचंद ने जीवन के विस्त साथ उद्घाटन करके उपन्यास साहि का अद्भुत प्रयत्न किया है। तियों का परिचय

ता और

ालसा और राष्ट्रीय संग्राम ता है। गा प

किया। ब्रह्म समाज ने विभिन्न स्थानों पर अनेक स्कूल और कॉलेज खोले। राजाराम मो स्वयं वेदान्त कॉलेज इंग्लिश और हिन्दू कॉ स्थापित किये। अन्य मोहन राय एक मुसलमान उन्हें थे तथा हिन्दु के अनुसार

धार्मिक स मुस

आ है की पुनः इ

चरण

मदर्स-डे

चिंतन-मनन

का दिन जो हमें देते हैं दिशा

र्ण और पूजनीय हैं। पावन दिन को हमारा उल्लास के साथ पल्ली राधा मनाया जाता है। शिक्षक की गरिमा और उन्हें हमेशा का, समाज का आगे चलकर उसका लिए शिक्षक की गरिमा को उन्होंने बड़ी सूझ-बूझ के साथ को शिक्षक दिवस के रूप में मनाना किया।

डॉ. राधाकृष्णन पूरे विश्व को एक विद्यालय मानते थे। उनका मानना था कि शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग किया जा सकता है। अतः विश्व को एक ही इकाई मानकर शिक्षा का प्रबंधन करना चाहिए। शिक्षा, शिक्षक और विद्यार्थी इन तीनों का संबंध बहुत गहरा और अटूट है। शिक्षा एक ऐसा शब्द है जिसमें सिर्फ किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि सर्वांगीण विकास समाया है। जिसमें व्यक्तित्व का निखार और चरित्र निर्माण भी समाहित है। ये सब चीजें हमें एक अच्छे शिक्षक, एक योग्य गुरू के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है। शिक्षक ही अपने विद्यार्थियों को इस योग्य बनाता है कि वे देश और समाज में अपनी योग्यता के कारण उचित स्थान प्राप्त कर सकें।

आज प्रायः शिक्षा, शिक्षक और विद्यार्थी को लेकर तरह-तरह की चर्चाएं होती रहती है। प्रारंभ काल से लेकर आज तक इन तीनों कड़ियों में न जाने कितने उतार चढ़ाव आए। अब शिक्षकों और विद्यार्थियों के संबंध को ही ले लीजिए कितना अंतर आ गया है। पहले हमारे यहां गुरू-शिष्य परम्परा थी जो तपोवनों में फलती-फूलती थी। यह हमारी भारतीय ... जो हमें आज भी अपने अतीत के गौरव की याद दिलाती है। ... पाश्चात्य संस्कृति के संपर्क में आई और ... शिक्षा का रूप बदला मानव

मूल्य बदले, विचार धारा बदली और इसका ग के संबंध पर पड़ा। विद्यार्थी उच्छृंखल हुआ, बहता गया और वह भूल गया अपने संस्कार, का सम्मान। इसी के समानान्तर एक आंधी शिक्षक भी अपने दायित्व और गरिमा को कि वह एक गुरू है, युग चेता है, एक मार्ग

मुंह मोड़ा और भटक और न अच्छा इंसान। है। यही स्थिति वि विद्यार्थी और शिक्षा परिस्थितियों में जो शिक्षक का सम्मान गया। आज हमारे कर खड़ी है। आ रहा है। वह काम है। शिक्षक आज क्लर्क मात्र बन नई जानकारी उसका काम हम किसे को या विद्यार्थियों को। यदि नए प्रयोगों के कारण आज व्यवसायिक पर्याय बनकर

शिक्षक दिवस करते हैं, उन्हें उपहार देते होते हैं हमारा उद्देश्य छिपे मर्म को नहीं समझ डगमगा गई है, पर की बात नहीं है। बन कर भी शिक्षक राधाकृष्णन, बाल विद्यार्थी हमारे उदाहरण है।

वेलेंट विशुद्ध प्रत्येक करता सद्भा किसी हैं, लें सिमट

अर आप पू में डटी हुई आने वाले चुनाव में राजनीतिक दलों सिखाएगी। देश में कृत्रिम अधिक लागत बताकर जन वालों का सबक सिखाने के है आप ने कमर कस ली है।

-श्रीमती शोभा मिश्र, सागर

मुद्दों जरिये देश की पारिवा व्याप्त स जनता बिठाएगी।

Scanned with OKEN Scanner